अध्याय-5

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध-प्रबंध चित्रकूट के पवित्र-संकुल पर केंद्रित करके इनका मानवशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। अभी तक भारत में काशी (सिन्हा और सरस्वती 1969), अयोध्या (वी. एस. उपाध्याय 1974), पुरी (झा 1974), कामाख्या 'असम' (एम. सी. गोस्वामी 1970), कालीघाट 'कलकत्ता' (एस. सिन्हा 1970), चामुंडा मंदिर 'मैसूर' (मोरव और गोस्वामी 1975 और 1977), प्रयाग (बी. के. दुबे 2002) आदि का अध्ययन हुआ। परंतु पवित्र-संकुल की विभिन्न अवधारणाओं से परिपूर्ण चित्रकूट का पवित्र-संकुल अध्ययन की दृष्टि से अनभिज्ञ था, जिसको इस शोध में पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। विभिन्न शोध प्रविधियों एवं तकनीकों का प्रयोग करते हुए प्रथम बार चित्रकूट के विभिन्न पवित्र-संकुलों का अध्ययन किया गया है। शोधार्थी ने ललिता प्रसाद विद्यार्थी की विभिन्न अवधारणाओं धार्मिक भूगोल, धार्मिक विशेषज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठान का प्रयोग करते हुए इन धार्मिक केन्द्रों का परीक्षण भी किया गया है। धार्मिक केन्द्रों को परखने के लिए निम्न लिखित परिकल्पनाएँ बनाई गई थी, जिसका विश्लेषण निम्न प्रकार से है -

1. पवित्र-संकुल धार्मिक भूगोल, धार्मिक अनुष्ठान तथा धार्मिक विशेषज्ञ का संश्लेषण है।

अध्याय 3 के 3.7(पृष्ठ संख्या-51-53) में चित्रकूट के धार्मिक विशेषज्ञ एवं अनुष्ठान प्रक्रिया तथा अध्याय-4 (पृष्ठ संख्या-66-79)पवित्र-संकुल के उपगमों को परखना में इसकी चर्चा की है। जिसमें चित्रकूट धार्मिक केन्द्रों में धार्मिक विशेषज्ञ तथा उनके अनुष्ठान प्रक्रिया में यह दर्शाने का प्रयास किया गया कि जब एक पवित्र-संकुल की रचना होती है तो यह तीन प्रकार के सम्मिलन को प्रस्तुत करता है, धार्मिक भूगोल (धार्मिक केंद्र), धार्मिक विशेषज्ञ तथा धार्मिक अनुष्ठान हैं। विभिन्न प्रकार के धार्मिक केन्द्रों के तत्वो के मिलने से एक नए प्रकार का

तत्व सामने आता है यह नया तत्व एक विशेष प्रकार की संरचना का निर्माण करता है, जिसे पवित्र-संकुल कहा जाता है। जो धार्मिक भूगोल, धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक विशेषज्ञ के सम्मिलन से बनता है। अतः पवित्र संकुल धार्मिक भूगोल, धार्मिक अनुष्ठान तथा धार्मिक विशेषज्ञ का संश्लेषण है। इसलिए यह परिकल्पना सत्य प्रतीत होती है।

2. **हिंदू-तीर्थ का पवित्र-संकुल लघु एवं वृहत परंपराओं के बीच निरंतरता, समझौते तथा सम्मिलन का स्तर प्रस्तुत करता है।**

अध्याय 3 में 3.10(पृष्ठ संख्या-58-62) चित्रकूट के परंपरागत त्यौहार तथा अध्याय 4 में 4.2(पृष्ठ संख्या-69-71) चित्रकूट के पवित्र-संकुल का धार्मिक अनुष्ठान में इसकी विस्तार से चर्चा की गयी है कि किस प्रकार इन वृहत परंपरा के धार्मिक केन्द्रों में लघु परंपरा के तत्व निरंतरता पैदा करते है इन धार्मिक केन्द्रो में प्रायः ग्राम तथा नगर के लोग एकत्र होते है ।जैसे-पीपल वृक्ष पूजा शास्त्रों में इसे अश्वत्थ प्रदक्षिणा व्रत की भी संज्ञा दी गयी है। अश्वत्थ यानि पीपल वृक्ष। इस दिन विवाहित स्त्रियों द्वारा पीपल के वृक्ष की दूध, जल, पुष्प, अक्षत, चन्दन इत्यादि से पूजा और वृक्ष के चारों ओर 108 बार धागा लपेट कर परिक्रमा करने का विधान होता है। कुछ अन्य परम्पराओं में भँवरी देने का भी विधान होता है। यह पीपल वृक्ष पूजा लघु परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जो वृहत परंपरा के साथ मिलकर एक पवित्र संकुल बनाता है। इस प्रकार देखा जाता है कि अनेकों लघु परंपराओं में धार्मिक विशेषज्ञों की भागेदारी लगातार बनी हुई है, जिससे लघु एवं वृहत परंपराओं के बीच निरंतरता बनी हुई है। लघु परंपराओं के विभिन्न धार्मिक तत्व जैसे-कलाई में रक्षा बाँधना, माथे पर तिलक लगाना, विभिन्न दंत कथाओं के तत्व इत्यादि वृहत परंपराओं के तत्वो में मिश्रित होते हुए दिखते है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदू-तीर्थ का पवित्र-संकुल लघु एवं वृहत परंपराओं के बीच निरंतरता, समझौते तथा सम्मिलन का स्तर प्रस्तुत करता है। इसलिए यह परिकल्पना सत्य प्रतीत होती है।

3. तीर्थ स्थल के धार्मिक विशेषज्ञ अपनी विशिष्ट जीवन-शैली द्वारा वृहत परंपरा के तत्व का संचार ग्रामीण जनता तक करते है।

अध्याय 4 के 4.3(पृष्ठ संख्या-72-76) चित्रकूट के पंडो की जीवन पद्धति में विस्तार से चर्चा की गयी है। जिसमें यह दर्शाने का प्रयास किया गया कि धार्मिक केन्द्रों में विशेषज्ञों द्वारा पूजा-पाठ का अनन्य लगाव होता है। तीर्थ-स्थलो के धार्मिक विशेषज्ञ (पंडे) एक विशेष प्रकार की जीवन शैली मे रहते है, विशेष प्रकार की कथा–वार्ताओ, संस्कार-अनुष्ठानों के कार्य कलाप करते है । श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक रेलीजन एंड सोसाइटी एमांग कुर्गस ऑफ साउथ इंडिया (1952) में संस्कृतिकरण प्रक्रिया का उल्लेख किया है। जिसमे यह दर्शाया गया कि उच्च ब्राह्मण की जीवन शैली ग्रामीण जनता अपना रही है। जैसे सुबह स्नान करना, सूर्य को जल देना, ललाट में चंदन लगाना, जनेव पहनना, नित्य मंदिर जाकर पूजा करना, मंत्रोच्चारण एवं प्रार्थना करना, मांस मदिरा का त्याग करना, बिना नहाए तथा पूजा-पाठ किए भोजन नहीं करना इत्यादि का उल्लेख किया है। उसी प्रकार चित्रकूट के धार्मिक सकुलों के पंडो विशेषज्ञों के क्रिया कलाप शास्त्रोक्त पद्धति पर अधारित होते हैं, जो वृहत परंपरा का प्रतिनिधित्व करते है तथा वहीं ग्रामीण जनता इस पूजा-पाठ का व्यवहार करती है इस प्रकार तीर्थ स्थल के धार्मिक विशेषज्ञ अपनी विशिष्ट जीवन-शैली द्वारा वृहत परंपरा के तत्व का संचार ग्रामीण जनता तक करते है। अतः यह परिकल्पना सत्य प्रतीत होती है ।

4. पवित्र-संकुल परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रस्तुत करते है।

अध्याय 4 के 4.6 (पृष्ठ संख्या78-79) पवित्र-संकुल पर पश्चमीकरण, आधुनिकीकरण तथा वैज्ञानिक शिक्षा के प्रभाव में यह दर्शाने का प्रयास किया गया कि समाज के विभिन अंगो पर आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक तत्वों पर पश्चमीकरण, आधुनिकीकरण तथा वैज्ञानिक शिक्षा का प्रभाव पड़ रहा है। इसी प्रकार पवित्र-संकुल पर पश्चमीकरण, आधुनिकीकरण तथा वैज्ञानिक शिक्षा के प्रभाव ने पवित्र-संकुल के महत्व को कम कर दिया है। इस पवित्र-संकुल में

परिवर्तन की प्रक्रिया को तब तक नहीं समझा जा सकता है जब तक पहले से उस पर कोई शोध कार्य न हुआ हो । पवित्र-संकुल में परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिए किसी शोधार्थी द्वारा एक ही स्थान पर कुछ समय अंतराल पर किए गए अध्ययन से पवित्र संकुल में हुए परिवर्तन को समझा जा सकता है। परन्तु पवित्र-संकुल शोध प्रविधि में इसका जिक्र नहीं किया जाता है , जिससे पवित्र-संकुल में परिवर्तन को समझा जाए । अतः पवित्र-संकुल परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रस्तुत नहीं करते है। इसीलिए यह परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

सुझाव-

1. पवित्र संकुल पर सुझाव- पवित्र-संकुल के विकास तथा उसमें आए परिवर्तन को समझने के लिए किसी शोधार्थी द्वारा एक ही समय में एक ही स्थान पर किए गए अध्ययन तथा उसी स्थान में कुछ समय अंतराल पर उसी शोधार्थी द्वारा किए गए अध्ययन से पवित्र संकुल में हुए विकास व परिवर्तन को समझा जा सकता है।

2. "धार्मिक विशेषज्ञ" पर सुझाव- एल. पी. विद्यार्थी ने जो धार्मिक विशेषज्ञ बताए थे उनमें पर्यटक प्रायः पर्यटन के उद्देश्य से आते है, जो किसी प्रकार के धार्मिक कार्य नहीं करते तथा इसी प्रकार शोध कार्य के लिए आए शोधर्थियों (जैसा की मै) की गिनती भी धार्मिक विशेषज्ञ के रूप में नहीं होती है। अतः धार्मिक विशेषज्ञ की श्रेणी मे नए विशेषज्ञों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

3. इन धार्मिक केन्द्रो में पंडो का जबरन अर्थ अर्जन बंद हो तथा सरकार इन धार्मिक केन्द्रों से टैक्स भी वसूल करे।

4. धार्मिक केंद्र ट्रस्ट पर अधारित है, जिसे सार्वजनिक किया जाए ताकि लोंगों को पता चले की यह हमारा रुपया किस कार्य के लिए लग रहा है।

5. इन धार्मिक केन्द्रों में मानवशास्त्रियों की सरकारी नियुक्ति होनी चाहिए, जो हर 2 या 3 साल में पवित्र-संकुल की रिपोर्ट सरकार को दे। ताकि धार्मिक केन्द्रों में हो रही गतिविधि परिवर्तन को समझा जा सके। तथा बाहरी लोगों का इन धार्मिक केन्द्रों में पड़ने वाले प्रभाव को जाना जा सके।

6. यह चित्रकूट का पवित्र-संकुल उ०प्र० व म०प्र० की सीमा रेखा पर स्थित है जहां अनेक धार्मिक केन्द्र है। इन धार्मिक केन्द्रों में दोनों प्रशासनों को पर्यटक को ध्यान में रखते हुए उचित दाम पर कमरा व साधन उपलब्ध कराना चाहिए। तथा इन धार्मिक केन्द्रों में आने वाली सड़को की मरम्मत व साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

7. धार्मिक केन्द्रों में खोया-पाया केन्द्र या टेलीफोन लाइन कि व्यवस्था होनी चाहिए ताकि विशेष पर्व पर खोए हुए व्यक्ति को अपने सगे संबंधी मिल सके।

8. सरकार धार्मिक केन्द्रों में वाहनो द्वारा लूट को रोके तथा इस क्षेत्र में धार्मिक सिटी बस की व्यवस्था करे।

9. धार्मिक केन्द्रों पर मिलने वाले खान-पान की वस्तुओं पर सरकार ध्यान दें क्योकि इन धार्मिक केन्द्रों में मिलावटी समान मिलने का खतरा ज्यादा है।